INDIAN SCHOOL MUSCAT PRIMARY SECTION	
Story No: 5 & 6	Name:
Resource Person: Ms. Reena Keshari	Class & Sec:

साथी की सहायता

एक लड़का था। उसका नाम रवि था। उसकी उम्र ग्यारह वर्ष की थी। उसका एक मित्र था। जिसका नाम पूरव था। वह बहुत गरीब था। वह अपने लिए किताबें नहीं खरीद सकता था। एक दिन कक्षा में अध्यापिका जी पूछ रही थी कि तुम अपना काम क्यों नहीं पूरा करते हो ? तब पूरव ने अध्यापिका जी को काम पूरा न करने का कारण बताया। रवि सब कुछ सुन रहा था और वह अपने मित्र पूरव की मदद करना चाहता था। एक दिन रवि अपने पिता के पास गया और बोला-पिता जी ! मुझे पाँच-सात रुपए दे दीजिए। पिता जी ने कहा पाँच सात रुपए ! तुम ये रुपए किस लिए माँग रहे हो ?

रवि बोला-मुझे इन रुपयों की ज़रुरत है। पिता ने रवि को पाँच रुपए दे दिए। लेकिन वे जानना चाहते थे कि रवि रुपए किस काम में खर्च करेगा। वे चुपचाप उसके पीछे चल पड़े। रवि सीधा अपने मित्र पूरव के घर गया और उसे बुला लाया । फिर दोनों मिलकर बाज़ार की ओर चल पड़े। पिता जी भी उनके पीछे - पीछे गए। बाज़ार में पुस्तकों की एक दुकान थी वहाँ दोनों रुक गए। वहाँ रवि ने कुछ पुस्तकें खरीदीं और अपने मित्र पूरव को दे दीं। दोनों साथी घर लौट आए। पिताजी समझ गए कि उनके बेटे ने अपने मित्र पूरव की मदद की।

पिताजी ने रवि को बुलाया। वे प्यार से बोले-तुमने बहुत अच्छा काम किया है। साथियों की सहायता करना बहुत अच्छी बात है। मैंने तुम्हें पुस्तकें खरीदते देख लिया था। यह देखकर आज मुझे बहुत खुशी हुई। ज़रुरतमंद की मदद करना बहुत ही अच्छी बात है।

सीख - ज़रुरतमंद की मदद करनी चाहिए।

आज्ञाकारी बेटा

किसी गाँव में रामू नाम का किसान रहता था। एक दिन वह किसी काम से शहर जाने के लिए निकला तो उसकी बूढ़ी माँ ने उससे कहा "बेटा तुम अकेले जा रहे हो। तुम किसी को साथ क्यों नहीं ले जाते ? जंगल का रास्ता है।" रामू ने कहा, माँ कोई बात नहीं, कुछ नहीं होगा। आप चिंता न करें।" फिर भी वह माँ थी, उसका मन नहीं माना। वह घर के पीछे वाले कुएँ पर गई और एक केकड़ा ले आई। उसने रामू के हाथ में केकड़ा देते हुए कहा, "बेटा इसे तुम अपने पास रखो, यह जंगल में तुम्हारे काम आएगा।" रामू ने अपनी माँ की बात मान ली और उसने केकड़े को कपूर की गोलियों के साथ एक थैले में रख लिया। रास्ते में चलते-चलते रामू थक गया और एक पेड़ की छाया में लेट गया। बहुत चलने के कारण लेटते ही उसे गहरी नींद आ गई। इतने में एक साँप आ गया और कपूर की सुगंध के कारण जैसे ही थैले के अंदर घुसा, केकड़े ने उसे मारकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। थोड़ी देर बाद रामू की आँख खुली तो उसने अपने पास पड़े साँप के टुकड़े देखे। वह सारी बात समझ गया और उसे अपनी माँ की कही बात याद आई। उसने मन ही मन सोचा कि माँ ने सच कहा था अगर मैं माँ का कहना नहीं मानता तो मुसीबत में पड़ जाता। फिर वह पास के एक कुएँ पर गया और हाथ-मुँह धोकर शहर की ओर चल पड़ा।

सीख -हमें सदा बड़ों की बात माननी चाहिए।